

वलायती कीकर : एक पारस्थितिकी खतरा

संदर्भ

दशकों से देश भर में वृक्ष प्रेमियों और पर्यावरणवादियों द्वारा वलायती कीकर *Prosopis juliflora* के वरिद्ध अभियान चलाया जा रहा है। ऐसा माना जाता है कि यह किसी अन्य प्रजाति को पनपने नहीं देता है। दिल्ली सरकार ने हाल ही में इस गैर-स्वदेशी वृक्ष को सेंट्रल रजि से हटाने की मंजूरी दी है। इस उम्मीद के साथ कि क्षेत्र की मूल वनस्पति जिसे शहर के फेफड़ों के रूप में जाना जाता है, के साथ ही जीवों को भी पुनःस्थापित किया जा सके।

वलायती कीकर से पारस्थितिकी खतरा

- यह शुष्क परस्थितियों में तेज़ी से वृद्धि करता है, किसी भी पौधे को बढ़ने नहीं देता है और जहाँ यह होता है वहाँ भूमिगत जल का स्तर काफी नीचे चला जाता है।
- दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात और तमिलनाडु में कई वैज्ञानिकों और कार्यकर्ताओं द्वारा इससे उत्पन्न पारस्थितिकी खतरे संबंधी दस्तावेज़ प्रस्तुत किये गए हैं।
- तमिलनाडु में इसे करुवेलम (karuvelam) कहा जाता है और इसकी लकड़ी को जलावन के रूप में उपयोग किया जाता है।
- 2016 में मद्रास उच्च न्यायालय ने इन पेड़ों को हटाने के अंतरिम आदेश पारित किये क्योंकि पहले से ही पानी के लिये संघर्ष कर रहे क्षेत्रों में यह वृक्ष भूमिगत जल के स्तर को और कम कर रहा था।
- 2017 में न्यायालय ने कीकर को हटाने की नगिरानी स्वयं शुरू की।
- दिल्ली में इस वृक्ष को हटाने का अभियान 1990 के दशक में शुरू हुआ जिसके तहत अदालत के मामलों, सरकार के प्रतिनिधियों और शोध-पत्रों के साथ इसके वरिध की ज़मीन तैयार हुई।
- हालाँकि, वजीराबाद में यमुना जैव विविधता पार्क का रूपांतरण वन विभाग को विश्वास दिलाता है कि योजना काम कर सकती है।
- 1930 की शुरुआत में अंगरेजों द्वारा इस वृक्ष को दिल्ली में लगाया गया था।
- दशक के अंत तक यह पूरी तरह से सेंट्रल रजि पर फैल गया था और इसने देशी बबूल, ढाक, कदंब, अमलतास, जंगली गुलमोहर इत्यादि को नष्ट करना शुरू कर दिया।
- पेड़ों के साथ-साथ जीव-जंतु, जैसे- पक्षियाँ, ततिलियाँ, तेंदुए, साही (porcupine) और गीदड़ गायब हो गए।

वलायती कीकर का हटाया जाना

- वलायती कीकर को हटाया जाना या काटा जाना और अन्य पौधों को विकसित होने की प्रतीक्षा करना दो कारणों से लाभकारी कदम है।
- सबसे पहले, अन्य प्रजातियों के वृक्षों को पुनर्जीवित करना तथा दूसरा रजि को बंजर छोड़ देने और देशी प्रजातियों के बढ़ने की प्रतीक्षा करने से अतिक्रमण को बढ़ावा मिला।
- अवक्रमित पारस्थितिकी प्रणाली पर्यावरण प्रबंधन केंद्र (CEMDE) का पहला कदम पेड़ों की शाखाओं को काटना और वनस्पतियों के कवर को कम करना है ताकि सूर्य की रोशनी ज़मीन तक पहुँच सके।
- इस प्रकार इसे काटने से पेड़ की फल उत्पादन क्षमता नष्ट होने लगती है और यह मुरझाना शुरू हो जाता है। इसके साथ-साथ, यह पर्याप्त सूर्य की रोशनी और पौधे को अंकुरित होने के लिये जल प्रदान करता है।
- इस प्रक्रिया को तेज़ करने के लिये उपयोग की जाने वाली एक अन्य विधि परजीवी रोपण है।

प्रतस्थापन (Replacement)

- वलायती कीकर का प्रतस्थापन परियोजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है इसके लिये वैज्ञानिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी।
- 30 वृक्ष समुदायों जैसे- पलाश (ढाक), स्टेरकुला तथा बबूल आदि की पहचान की गई है जो सभी भारत में पाए जाते हैं।
- इनमें से कुछ वतान (canopy) हैं जो तीन मंज़िला तक लंबे हैं और पूरी तरह से उगने पर किसी भी कीकर को बौना कर सकते हैं।
- पौधे कहाँ से लाए जाएंगे यह भी एक चुनौती है। चूँकि इनमें से कई प्रजातियों का दिल्ली में उन्मूलन कर दिया गया है, इसलिये यह शहर हरियाणा और गुजरात की ओर देख रहा है।

यमुना जैव विविधता उद्यान

- 2002 में वजीराबाद में यमुना जैव विविधता उद्यान के विकास पर काम शुरू हुआ।

- 457 एकड़ से अधिक में फैले इस उद्यान में देशी पेड़, झाड़ी और क्रीपर प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इसमें अनेक छोटे जल नकिया व नौका-वहिर हैं।
- इसका सबसे प्रसिद्ध आगंतुक शायद एक युवा तेंदुआ था जसि नवंबर 2016 में देखा गया था।
- तेंदुए लंबे समय तक एक कषेत्र में तभी रह सकते हैं जब उन्हें उपयुक्त आवास, पर्याप्त शक्ति, जल संसाधन और कुछ अज्ञातवास मलि जाएँ।
- बाद में तेंदुए को स्थानांतरति कर दया गया था, यहाँ जैव वविधता अभी भी कायम है। CEMDE को उम्मीद है कस्थानीय पारस्थितिकि तंत्र को बरकरार रखा जा सकता है।

समस्या तथा समाधान

- फैलाव – दलिली, हरयाणा, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र के कुछ भाग तथा तमलिनाडु।
- दलिली – 7777 हेक्टैयर, 80% वलियाती कीकर रजि में पाया जाता है।
- प्रतस्थापन परयोजना का लक्ष्य – 482 एकड़।
- पहले चरण में धौलाकुआँ से राष्ट्रपति भवन के बीच एसपी मार्ग पर 100 एकड़ एरया कवर कया जाएगा।
- पहले चरण में 30 वृक्ष समुदाय वलियाती कीकर को हटाने का काम करेंगे।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/how-to-uproot-an-ecology-threat>

